26-2-67 रात्री   ओम शान्ती   प्रातःक्लास

वच्चे यहाँ मधुवन में आते है वापदादा के पास। यहाँ फिर आते है, तो देखते है पहले वहन वैठी है। फिर पीछे देखते है कि वापदादा आया हुआ है। तो वाप की याद आती है। तुम हो ब्राहम्ण ब्राह्मणियाँ। जव प्रजापिता ब्रह्मा है तो ब्राहम्ण ब्राहमिणयाँ हो। वो ब्राहम्ण तो वाप ब्रह्मा को जानते ही नही। तुम वच्चे जानते हो वाप जव आते है तो ब्रह्मा विष्णु शंकर भी जरूर चाहिये। कहते है त्रिमूर्ती शिव भगवानोवाच्य अव तीनो दवारा तो नही वोलेंगे नां। यह वाते अच्छी रीती वुधी में धारन करने की है। वेहद के वाप से सव को वेहद का जरूर वर्सा मिलता है तव तो सव भक्त भगवान को याद करते है। भक्त अलग है भगवान अलग है। तो फिर सर्वव्यापी का प्रश्न नही उठ सकता। भक्त भक्त भगवान से क्या चाहते है? जीवन मुक्ति। अव है जीवन वंध। सभी वाप को याद करते है कि आकर इस जीवन वंध से मुक्त करो। अव तुम वच्चे ही समझते हो कि वावा आया हुआ है। कल्प-2 आते है। पुकारते भी है तुम मात-पिता.... परन्तु उसका अर्थ तो कोई भी समझते नही है। निराकार वाप के लिये समझ लेते है। गाते है परन्तु मिलता कुछ भी नही अव तुम वच्चों को इनसे मिलता है। फिर कल्प वाद मिलेगा। वच्चे जानते है वाप आधा कल्प के लिये आकर वर्सा देते है। फिर रावण श्राप देते है। यह भी दुनियाँ नही जानती है कि हम श्रापित है। रावण का श्राप लगा हुआ है इसीलिये सव दुखी है। भारतवासी सुखी थे। कल इन ल.न. का राज्य था नां। मन्दिरों में भी जाते है। परन्तु भक्ति मार्ग शास्त्रों दवारा ल.न. को कितना दूर ले गये है। सतयुग की आयु लाखो वर्ष कह देते है। है 1250 वर्षो की वात। शास्त्रों में सिर्फ सतयुग की आयु लाखो वर्ष की लिख दी है। लाखो वर्ष की वात तो कोई को भी याद नां रहे। इतना जानते है कि इन लक्ष्मी नारायण का राज्य भारत में थे। कव? यह पता नही है। देवताओं के आगे माथा टेकते है। पूजा करते है परन्तु सतयुग कव था यह कोई को पता नही है। लाखो वर्ष कह देते है। अव लाखो वर्ष की वात से पता कैसे पड़ सकता है। सतयुग की आयु लाखो वर्ष फिर त्रेता की आयु इतनी, ऐसे तो ढेर मनुष्य हो जावे। सिर्फ देवी देवता धर्म के ही सतयुग में 5, 7 की करोड़ हो जावें। एक एक वच्चा भी पैदा हो तो विचार करो कि लाखो वर्ष की वात हो तो मनुष्य कितने ढेर हो जावे। भारत की संख्या इस समय 400 करोड़ कहते है। अगर सतयुग लाखो वर्ष का होता तो मनुष्य कितने होने चाहिये। लाखो तो क्या पदमों के अन्दाज में हो जावे। कोई भी मनुष्य की वुधी में नही वैठता। वाप वैठ समझाते है गाया भी जाता है 33 करोड़ देवताये होते है। ऐसे थोड़ेई कि वो कोई लाखो वर्ष में हो सकते है। 33 करोड़ देवताये सतयुग में होते है। 2500 वर्ष में मनुष्य 33 करोड़ होते है। अगर सतयुग लाखो वर्ष, त्रेता लाखो वर्षो का होता तो कितने मनुष्य हो जावे। तो कैसे मनुष्यों को समझाना पड़े नां। कितने तुच्छ वुधी वन गये है। अव तुम समझते हो वाप हमको स्वच्छ वुधी वनाते है। रावण मलेच्छ वुधी वनाते है। मुख्य वात तो यह है सतयुग में है पवित्र। यहां है अपवित्र। यह भी किसीको पता नही राम राज्य कव से कव तक, रावण राज्य कव से कवतक होता है। समझते है यहां ही राम राज्य भी है रावण राज्य भी है। अनेक मतमतान्तर है नां। जितने है मनुष्य उतनी है मते। अव यहां तो वच्चों को एक अदवेत मत मिलती है। वाप ही देते है। तुम अभी ब्रह्मा दवारा देवता वन रहे हो। देवताओं की महिमा भी गाते है सर्वगुण सम्पन्न...है तो वो भी मनुष्य यह भी मनुष्य है। मनुष्यों की महिमा गाते है। क्यो? जरूर फर्क होगा नां। अभी तुम वच्चे जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो अच्छी रीत पढ़ते है तो फिर पढ़ाते भी है। अव तुम मनुष्यो को देवता वनना सिखाते हो। कलियुगी मनुष्यों को तुम सतयुगी देवता वनाते हो अथवा शान्ती धाम ब्रह्माण्ड का मालिक वनाते हो। तुम ब्रह्मांड के और विश्व के भी मालिक वनते हो। यह तो शान्ती धाम नही है नां। यहां तो कर्म जरूर करना पड़े। वो है शान्ती धाम। स्वीट साईलेन्स होम। अव तुम समझते हो हम आत्माये स्वीट साईलेन्स होम के मालिक वनते है। वहां दुःख सुख से न्यारे रहते है।

फिर सतयुग मे विश्व के मालिक बनते हो। अब तुम बच्चे लायक बन रहे हो। ऐम ओबजेक्ट सामने रखा हुई। ऐसे नही कि राम सीता को सामने रखते हैं। नही वोउतो नापास की ऐम आबजेक्ट है। वो कैसे सामने रखेंगे। यह लक्ष्मी नारायण है फुल पास। अब तुम हो योगबल वाले। वो है बाहुबल वाले। तुम भी हो युद्ध के मैदान। परन्तु तुम हो डबल अहिंसक। वो है हिंसक। हिंसा काम कटारी को कहा जाता है। सन्यासी भी समझते है यह हिंसा है। इसलिये ही पवित्र बनते है। परन्तु बाप समझाते है इन सबको कहा जाता है विनाश काले विपरित बुद्धी। तुम्हारे सिवाय बाप के साथ प्रीत बुद्धी कोई ~~...~~ कोई की है नही। आशुक माशूक की प्रीत होती है नां। वो आशुक माशूक तो एक जन्म के गाये हुये है। तुम सब हो मुझ माशूक के आशिक। भक्ति मार्ग मे मुझ एक माशूक को याद करते आये हो। अब तो मैं कहता हूं यह अन्तिम जन्म जरूर पवित्र रहो। और यथार्थ रीती याद करो तो फिर याद करने से ही छूट जावेंगे। सतयुग मे याद करने की दरकार ही ~~नही रहती है~~ रहेगी। दुःख मे सिमरण सब करते है। भक्ति मार्ग दुःख का मार्ग है नां। यह है नर्क। इसको स्वर्ग तो नही कहेंगे नां। बड़े आदमी जो धनवान है वो समझते है हमारे लिये तो यहां ही स्वर्ग है। विमान आद सबकुछ वैभव है। समझते है गांधी ने तो स्वर्ग बनाया है। अब यह कोई स्वर्ग थोड़ेई है। मनुष्य कितनी आपदा मे रहते है। गाते भी है तुम मात-पिता... परन्तु समझते कुछ नही है। कौनसे सुख घनेरे मिले यह कोई भी नही जानते है? बोलती तो आत्मा है नां तुम आत्मायें समझते हो हमको सुख घनेरे मिलने है। इसका नाम ही है स्वर्ग। सुखधाम। स्वर्ग बहुत मीठा भी लगता है सबको। तुम जानते हो स्वर्ग मे हीरे जवाहरों के कितने महल थे। भक्ति मार्ग मे भी कितना धन था जो सोमनाथ का मन्दिर बनाया है। एक एक पत्थर चार लाख कीमत वाले थे। वो सब कहां चले गये है। कितने लूट करके गये। मुसलमानों ने भी जाकर मस्जिदों मे लगा दिये है। इतना अथाह धन था। अब तुम बच्चों की बुद्धी मे है हम बाप से फिर से स्वर्ग का मालिक मालिक बनते है। वहां हमारे महल सोने के होंगे। दरवाजों पर भी जड़त लगी हुई होगी। जैनियों के मन्दिर भी ऐसे बने हुये होते है। अब वो हीरे आद तो नही है नां जो पहले थे। अब तुम जानते हो हम बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे है। शिव बाबा आते भी भारत मे ही है। भारत को ही शिवभगवान से वर्सा मिलता है। क्रिश्चन भी कहते है क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत हेवन था। राज्य कौन करते थे। यह किसीको पता नही है। बाकी यह समझते है भारत बहुत पुराना है। वो यहां स्वर्ग था नां। बाप को कहते भी है ~~...~~ हेवनली गाड फादर। अर्थात हेवन स्थापन करने वाला गाड फादर। जरूर फादर आये होते तब तुम स्वर्ग के मालिक बने होंगे। यह भी जानते हो हम ही 5000 वर्ष बाद स्वर्ग के मालिक बनते है फिर आधा कल्प के बाद रावण राज्य शुरू होता है। चित्रों मे ऐसे क्लीयर कर बताओ जो लाखो वर्ष की बात क्लीयर हो जावे। लक्ष्मी नारायण कोई एक नही इनकी तो डिनाइस्टी होगी नां। फिरउनके बच्चे राजा बनते होंगे। राजायें तो बहुत बनते है नां। सारी माला बनी हुई है। माला को ही सिमरते बैठ पूजते है। पहले-2 माला पर हाथ लगाकर फिर माथा टेकेंगे। पीछे माला को फू फेरना शुरू करते है। तुम भी सारा चक्र लगाते हो फिर शिव बाबा से वर्सा पाते हो। यह राज़ तुम्ही जानते हो। मनुष्य तो कोई किसीके नाम पर कोई किसीके नाम पर माला फेरते है। जानते कुछ भी नही है। अब तुमको माला का सारा ज्ञान है। और कोई को यह ज्ञान नही है। क्रिश्चनस थोड़ेई समझेंगे कि हम तुम्हारी माला फु फेरते है। यह माला है ही उनकी जो बाप का मददगार बन सर्विस करते है। इस समय सभी पतित है। जो पावन थे वो फिर यहां आते-2 पतित बनते है। फिर नम्बरवार साथ जावेंगे। नम्बरवार आते है नम्बरवार जाते है। कितने समझ की बाते है। यह झाड़ है। कितने डार टार छोटे मठ पंथ है। जो घर से रुसे वो अपनी डफली जोकर बनावे। अब यह सारा झाड़ खलास होना है। फिर तुम्हारा फाउंडेशन लगेगा। तुम ही इस झाड़

के फाउण्डेशन। इसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों हैं। सतयुग त्रेता में जो राज्य करने वाले थे उनका अभी धर्म ही नहीं है। सिर्फ चित्र है। कृष्ण को द्वापुर में ले गये है वो भी झूठ। यह है ही झूठीदुनियां। सच का किसीको भी पता नहीं है। जिनके चित्र उनकी बायोग्राफीको तो जानना चाहिये ना। कह देते है फलानी चीज तो लाखों की पुरानी है। अब वास्तव में पुराने से पुराना है आदी सनातन दैवी देवता धर्म। इनके पहले की तो कोई चीज हो ही नही सकती। बाकी सब 2500 वर्ष की पुरानी चीजे होगी। नीचे से खोद कर निकालते है ना। भक्ति मार्ग में जो पूजा करते है वो पुराने चित्र निकालते है। क्योंकि अर्थक्वेक में सब मन्दिर आद गिर पड़ते है। फिर नये बनते है। सतयुग की चीज तो सिवाय (लक्ष्मी नारायण.) के कोई मिल नही सकती। हीरे सोने आद की खानियां जो अभी खाली हो गई है वो फिर भरतु हो जायेंगी। यह सब बाते अभी तुम्हारी बुधी में है। बाप ने रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान दिया है। अथवा वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाई है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होते है फिर वृधी को पाते है। आत्मायें सब परमधाम से आती रहती है। आते-2 झाड़ बढ़ जाता है। फिर जब झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था हो जाती है तो कहा जाता है राम गया रावण गयो जिनके बहु परिवार। अनेक धर्म हैं ना। हमारा परिवार कितना छोटा है। वह सिर्फ ब्राह्मणों का ही परिवार है। वो कितने अनेक धर्म है। आदम शुमारी बताते है ना। वो सब है रावण सम्प्रदाय। यह सब जावेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। रावण सम्प्रदाय फिर आवेंगे नही। सब मुक्ति धाम चले जावेंगे। बाकी तुम जो पढ़ते हो वो नम्बरवार आवेंगे स्वर्ग में। अब तुम बच्चों ने समझा है कैसे वो निराकारी झाड़ है और यह मनुष्य सृष्टी का झाड़ है। शिव बाबा की तो सभी आत्मायें सन्तान है। फिर है प्रजापिता ब्रह्मा इनको कहा जाता है ग्रेट ग्रेट गॉड फादर। फिर इनसे अणगिनत ब्रांचिया निकलती है। अब तुम बच्चों ने निराकारी सिजरे को और साकारी सिजरे को भी समझा है। यह तुम्हारी बुधी में है। पढ़ाई पर ध्यान नही देंगे तो परिक्षा में नापास हो जावेंगे। पढ़ते और पढ़ाते रहेंगे तो खुशी भी होगी। अगर विकार में गिरे तो बाकी भी सब भूल जावेंगे। सोने का बर्तन होता है प्योर गोल्ड। असल्या जो प्योअर सोना होगी उसमें धारना अच्छी हो सकती है। विकार में गये फिर किसीको भी ज्ञान सुना नही सकेंगे। अभी तुम सामने बैठे हो। जानते हो गाड फादर शिव बाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे है। हम आत्मायें इन आर्गन्स दवारा सुन रही है। पढ़ाने वाला बाप है। ऐसी पाठशाला सारी दुनियां में कहीं होगी? यह भी तुम समझते हो वो गाड फादर है। टीचर भी है। सतगुरु भी है। सबको वापस ले जावेंगे। इनका शरीर छूट जावेगा तो तुम्हारा भी छूट जावेगा। सबको बाप ले जावेंगे। अब तो तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन खरीद की कर ली है। वैसे ही टैलीविजन भी एक दिन खरीद कर लेंगे। पहले तो बाबा मंगावेंगे। टेप मशीन 1500 में मिलती है। टैलीविजन करके 8, 10 हजार में मिलेगा। एक बाम्बे लिये एक देहली लिये एक कलकत्ते लिये लेंगे। सिर्फ बाबा को कोई समाचार देवें कि टैलीविजन इतने में मिलता है। बाबा आर्डर दे देंगे। एक तुम्ही एक हम लेते है। बच्चो के सुख लिये बाप क्या नही परबंध करेंगे। कोई बड़ी बात तो नही है ना। शिव बाबा कहते है यह सांवलशाह है ना। था सुन्दर अब सांवरा बना है। शाम सुन्दर कहते है ना। तुम समझते हो हम सुन्दर थे अब श्याम बने है फिर सुन्दर बनेंगे। सिर्फ एक कृष्ण को क्यों कनेगा। एक ही सर्प ने डसा क्या? सर्प तो माया को कहा जाता है ना। विकार में जाने से सांवरे बन जाते है। कितनी समझ की बातें है। मुख्य है ही त्रिमूर्ती। बेहद का बाप कहते है गृहस्थ व्यवहार में रहते यह अन्तिम जन्म फार माई सेक- पवित्र बनो। बच्चों से बाप यह भीख मांगते है। बाप कहते है सिर्फ मुझे ही याद करो। सबकी पानी की नदियों में स्नान करने से थोड़ेई पावन बनेंगे। पानी भी तत्व है ना। पानी के लिये कहना कि यह पतितपावन है तो यह कितनी मूढ़ता है! ओम